त्र्यक्षरी मन्त्र की साधना

क–मन्त्र–उद्धार

भगवती बाला के '**त्र्यक्षर मन्त्र**' (**ऐं क्लीं सौः**) का उद्धार 'मन्त्र–महोदधि' में इस प्रकार दिया है–

दामोदरश्चन्द्र–युतः, आद्यं वाग्–वीजमीरितम् ।
विधिर्वासव–शान्तीन्दु–युक्तं कामाभिदं परम् ।
सङ्कर्षण–विसर्गाढ्यो, भृगुस्तार्तीयमीरितम् ।
त्रि–बीजा गदिता बाला, जगत्–त्रितय–मोहिनी ।।

अर्थात्–दामोदर='ऐ'–कार, चन्द्र–युक्त=अनुस्वार से युक्त–यह 'त्र्यक्षरी' का पहला बीज(**ऐं–वाग्–वीज**) है । विधि='क'–कार, वासव='ल'–कार, शान्ति='ई'–कार और इन्दु=चन्द्रमा=अनुस्वार–यह 'त्र्यक्षरी' का दूसरा वीज (**क्लीं–काम–वीज**) है । सङ्कर्षण=औकार, विसर्गाढ्यः=विसर्ग से युक्त, भृगुः='स'–कार–यह 'त्र्यक्षरी' का तीसरा वीज(**सौः–शक्ति–वीज**)है । यह त्रि–वीजा(**ऐं क्लीं सौः**)–तीन बीजाक्षरोंवाली **बाला–विद्या** जगत्–त्रय को मोहित करनेवाली है ।

'मन्त्र–कोष' में '**त्र्यक्षरी**' मन्त्र का उद्धार इस प्रकार है–

अधरो बिन्दुमानाद्यं, ब्रह्मेन्द्रस्थः शशि–युतः द्वितीयं । भृगु–सर्गाढ्यो मनुस्तार्ती समीरितः ।।
एषा बालेति विख्याता, त्रैलोक्य–वश–कारिणी ।

अर्थात्–अधर (ऐ–कार) बिन्दु–योग द्वारा प्रथम बीज '**ऐं**' होता है । ब्रह्म (क) के द्वारा इन्द्र (ल) से और शशि (ई) से योग करके बिन्दु देने पर '**क्लीं**' द्वितीय बीज होता है । भृगु (स) से मनु (औ) से योग करके विसर्ग देने पर तृतीय बीज '**सौः**' होता है । यह **त्रैलोक्य–वश–कारिणी बाला विद्या** विख्यात है ।

'ज्ञानार्णव तन्त्र' में इस '**त्र्यक्षरी मन्त्र**' का उद्धार इस प्रकार दिया है–

सूर्य–स्वरं समुच्चार्य, विन्दु–नाद–कलान्वितं । स्वरान्त–पृथिवी–संस्थं , तूर्य–स्वर–समन्वितम् ।।
विन्दु–नाद–कला–क्रान्तं, सर्ग–वान् भृगुरव्ययः । शक्र–स्वर–समायुक्ता, विद्येयं त्र्यक्षरी मता ।।

अर्थात्–सूर्याक्षर, द्वादश स्वर 'ऐ'–कार विन्दु–युक्त प्रथम बीज '**ऐं**' है । स्वर–वर्ण के परवर्ती वर्ण 'क'–कार में पृथ्वी (ल) का प्रयोग करके 'ई' और विन्दु देने पर द्वितीय वीज '**क्लीं**' होता है । शक्र स्वर 'औ'–कार, भृगु (स) और विन्दु एवं विसर्ग के देने पर '**सौः**' होता है । अर्थात् '**ऐं क्लीं सौः**' इस '**त्र्यक्षर मन्त्र**' से भी **त्रिपुरा बाला** की आराधना की जाती है । विसर्ग और बिन्दु–संयुक्त यह –'**त्र्यक्षरी मन्त्र**' 'शाप–ग्रस्त' है ।

'त्रिपुरा–सार–समुच्चय' में **बाला माता** के मूल–मन्त्र '**त्र्यक्षरी**' के विषय में इस प्रकार लिखा है–

अथ त्रि–लोकार्चित–शासनाया, वक्ष्यामि बीज–त्रयमम्बिकायाः ।
गोप्तव्यमेतत् कुल–धर्म्मविद्भिरमुष्य–हेतोर्निज–सिद्धये च ।।१

अर्थात् तीनों लोकों द्वारा अर्चिता शासिका के तीनों बीजों को बताऊँगा । कुल–धर्म के जाननेवालों को कुल–रक्षा एवं अभीष्ट–सिद्धि के लिए उन्हें गुप्त रखना चाहिए ।।१

कान्तादि-भूत-पदगं क-गतार्द्ध-चन्द्रम् , दन्तान्त-पूर्व-जलधि-स्थित-वर्ण-युक्तम् ।
एतज्जपन् नर-वरो भुवि वाग्भवाख्यं, वाचां सुधा-रस-मुचां लभते स सिद्धिम् ।।२

पहले वीज का उद्धार करते हैं–'**कान्तादि-भूत-पदगं**' अर्थात् क-कार अन्त में है जिसके, उस विसर्ग '**अः**' का आदि-भूत पद='अ' । '**दन्तान्त-पूर्व**' अर्थात् 'दन्त'=ओ, उसके अन्त में आनेवाला 'औ' उससे पहले– '**जलधि-स्थित-वर्ण**' अर्थात् विलोम क्रम से चौथे स्थानवाला अक्षर–'ए' । इन 'अ' और 'ए' के मिलने से बना 'ऐ', उसे '**क-गतार्द्ध-चन्द्रं**' अर्थात् सिर पर अनुस्वार युक्त करने से '**वाग्भव**' नामक बीज '**ऐं**' प्रस्तुत होता है, जिसे जपता हुआ श्रेष्ठ मनुष्य पृथ्वी पर अमृत रस बहानेवाली वाणी से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करता है।।२

कान्तान्तं कुल-पूर्व-पञ्चम-युतं नेत्रान्त-दन्तान्वितम् ।
कामाख्यं गदितं जपन् मनुरयं साक्षाज्जगत्-क्षोभ-कृत् ।।३

दूसरे बीज का उद्धार करते हैं–'**कान्तान्तं**' अर्थात् 'क'=विन्दु या 'अं' उसके अन्त में आनेवाला 'अः' और उसके बाद का अक्षर '**क**', '**कुल-पूर्व-पञ्चम-युतं**' अर्थात् 'कुल' या स-कार से पहले विलोम-क्रम से पाँचवें स्थान पर आनेवाला अक्षर '**ल**' से युक्त='**क्ल**' । '**नेत्रान्त-दन्तान्वितं**' अर्थात् 'नेत्र' या 'इ' के अन्त में आनेवाला स्वर 'ई', 'दन्त' या अनुस्वार से युक्त उसमें जोड़ें, तो 'काम' नामक यह मन्त्र '**क्लीं**' जपने से सारा संसार प्रत्यक्ष रूप से विचलित हो उठता है ।।३

दन्तान्तेनयुतं स-दन्ति-सकलं सम्मोहनाख्यं कुलम् ।
सिद्ध्यत्यस्य गुणाष्टकं खेचरता-सिद्धिश्च नित्यं जपात् ।।४

तीसरे बीज का उद्धार करते हैं–'**दन्तान्त**' अर्थात् 'औ' से युक्त दन्ती 'स' = 'सौ' को '**सकल**' अर्थात् विसर्ग-सहित-'**सौः**' का सदा जप करने से अष्ट-सिद्धि और खेचरी-सिद्धि प्राप्त होती है ।।४

ऋषिर्दक्षिणामूर्ति-संज्ञो महात्मा, भवेच्छन्द एतस्य मन्त्रस्य पंक्तिः ।
सरस्वत्यचिन्त्य-प्रभावा प्रदिष्टा, बुधैर्देवता देव-वृन्दार्चिताङ्घ्रीः ।।
अमुष्य मन्त्रस्य रदान्त-युक्तम्, बीजं स-दण्डं नकुलीश-पूर्वम् ।
शक्तिस्तु साखण्डल-कर्ण-पूर्व-सहार्ध-जैवातृकमाननान्तम् ।।५

उक्त त्र्यक्षर मन्त्र के ऋषि आदि बताते हैं–इस मन्त्र के ऋषि **दक्षिणामूर्ति** नामक महात्मा हैं । **छन्द पंक्ति** है । इस मन्त्र का **बीज** 'रद' या 'ओ' के अन्त में आनेवाला स्वर 'औ' से युक्त 'नकुलीश' या 'ह' से पूर्व आनेवाले व्यञ्जन 'स' अर्थात् 'सौ' को 'दन्त' या अनुस्वार लगाने से '**सौं**' बनता है । इस मन्त्र की **शक्ति** '**आखण्डल-कर्ण-पूर्व**' अर्थात् 'ल' में 'ई' को 'अर्द्ध-जैवातृक' या 'अर्द्ध-चन्द्र' के साथ 'आननान्त' या 'क' में लगाने से '**क्लीं**' बनता है । इस मन्त्र का वर्ण '**शुक्ल**' है और स्वर '**गान्धार**' है ।।५

उक्त '**त्र्यक्षरी मन्त्र**' का माहात्म्य लिखते हुए 'मन्त्र-महोदधि'-कार कहते हैं कि इस '**त्र्यक्षरी मन्त्र**' के जपने से उपासक विद्या में देव-गुरु 'वृहस्पति' के समान विद्वान् और धन-धान्य-सम्पत्ति में 'कुबेर' के समान हो जाता है ।

✵✵

ख–'त्र्यक्षरी मन्त्र' के प्रत्येक वीज की साधना

'त्र्यक्षरी मन्त्र' के प्रत्येक बीज को 'एकाक्षर मन्त्र' मानकर भी उपासना की जाती है। **तीनों बीजाक्षर-मन्त्रों के ध्यान और उपासना-विधि निम्न प्रकार है–**

'ऐं' का ध्यान

विद्याक्ष-माला-सुकपाल-मुद्रा-राजत्-करां कुन्द-समान-कान्तिम् ।
मुक्ता-फलालंकृति-शोभिताङ्गीं, बालां स्मरेद् वाङ्-मय-सिद्धि-हेतोः ।।
ध्यात्वैवं वाग्भवं लक्ष-त्रयं शुक्लाम्बरावृतः ।
शुक्ल-चन्दन-लिप्ताङ्गो, मौक्तिकाभरणान्वितः ।।
जपित्वा तद्दशांशेन, पालाश-कुसुमैर्नवैः ।
जुहुयात् मधुराक्तैर्यः, स कविर्युवती-प्रियः ।।

प्रथम वीज की उपासना हेतु उपासक को शुक्ल वस्त्र धारण कर, शुक्ल चन्दन और मोतियों के आभरणों से विभूषित होकर, **भगवती बाला** का उक्त प्रकार ध्यान कर प्रथम वाग्-भव बीज 'ऐं' का तीन लाख जप करना चाहिए। जप के बाद मधु-युक्त पलाश (ढाक) पुष्पों से दशांश हवन करना चाहिए। जो ऐसा करता है, वह कवि और वनिता-प्रिय बनता है।

क्लीं का ध्यान

भजेत् कल्प-वृक्षाध उद्दीप्त-रत्नासने, सन्निषण्णां मदाघूर्णिताक्षीम् ।
करैर्बीज-पूरं कपालेषु-चापं, स-पाशांकुशां रक्त-वर्णां दधानाम् ।।
ध्यात्वा देवीं जपेल्लक्ष-त्रयं यो मध्य-वीजकम् ।
रक्त-वस्त्रावृतो रक्त-भूषणो रक्त-लेपनः ।।
दशांशं मालती-पुष्पैश्चन्द्र-चन्दन-लोलितैः ।
जुहुयात् तस्य वश्याः स्युस्त्रि-लोक-जनताः क्षणात् ।।

द्वितीय बीज की उपासना हेतु उपासक को रक्त वस्त्र पहन कर, रक्त-चन्दन और रक्त-पुष्पों से सु-सज्जित होकर, **भगवती बाला** का उक्त प्रकार ध्यान कर द्वितीय काम-वीज (क्लीं) का तीन लाख जप करना चाहिए। जप के बाद कर्पूर और चन्दन से मिश्रित मालती के पुष्पों से दशांश हवन करना चाहिए। जो ऐसा करता है, वह तीनों लोकों के लोगों को वश में कर लेता है।

'सौः' का ध्यान

व्याख्यान-मुद्रामृत-कुम्भ-विद्यामक्ष-स्रजं सन्दधतीं कराग्रैः ।
चिद्-रूपिणीं शारद-चन्द्र-कान्तिं, बालां स्मरेन्मौक्तिक-भूषिताङ्गीम् ।।
ध्यात्वैवं शक्ति-वीजं च, जपेल्लक्ष-त्रयं सुधीः ।
सित-वस्त्रानुलेपाढ्यामात्मनं देवतां स्मरेत् ।।

मालती-कुसुमैर्हुत्त्वा, चन्दनाक्तैर्दशांशतः ।
लक्ष्मीर्विद्या-सुकीर्ति-नामाधारो जायते चिरात् ।।

तृतीय वीज की उपासना हेतु उपासक को शुभ्र-वस्त्र पहन कर, शुक्ल चन्दन, माला से विभूषित होकर, **भगवती बाला** का उक्त प्रकार ध्यान कर तृतीय वीज (सौः) का तीन लाख जप करना चाहिए। जप के बाद चन्दन-मिश्रित मालती पुष्पों से दशांश हवन करना चाहिए। जो ऐसा करता है, वह चिर-काल तक संसार में लक्ष्मी, विद्या और कीर्ति का भाजन बन जाता है।

ग-पुरश्चरण

बाला त्रिपुर-सुन्दरी के **'त्र्यक्षरी मन्त्र'** का **पुरश्चरण** करने के लिए **तीन लाख जप** करना चाहिए। जप के बाद, जप का दशांश हवन किंशुक पुष्प (ढाक के फूल) अथवा रक्त करवीर (लाल कनेर) के फूलों को मधु में मिलाकर करना चाहिए। यथा-

लक्ष-त्रयं जपेन्मन्त्रं, दशांशं किंशुकोद्भवैः । पुष्पैर्हयारिजैर्वाऽपि, जुहुयान्मधुरान्वितैः ।।

घ-शापोद्धार, उत्कीलन, दीपन तथा गुरु-परम्परा

भगवती बाला की यह **'त्र्यक्षरी विद्या'** भगवान् सदा-शिव से कीलित की गई है। अतः इसका **शापोद्धार** और **उत्कीलन** कर तथा बीजाक्षरों का **दीपन** कर मन्त्र का जप करना चाहिए। **शापोद्धार, उत्कीलन एवं दीपन की विधि** इस प्रकार है-

योजयेद् आदिमे वीजे, वाराह-भृगु-पावकान् ।
मध्यमादौ नभो हंसो, मध्यमान्ते तु पावकम् ।।
आदाबन्ते च तार्तीये, क्रमाद्वै धूम-केतनम् ।
एवं जप्त्वा शतं विद्या, शाप-हीना फल-प्रदा ।।

बाला त्रिपुर-सुन्दरी के प्रथम **वाग्भव-वीज** के पहले वाराह= 'ह'-कार, भृगु= 'स'-कार, पावक= 'र'-कार जोड़कर उसे भैरवी-वीज (**ह्स्त्रैं**) बनाए। द्वितीय **काम-वीज** के पूर्व भी नभः= 'ह'-कार, हंसः= 'स'-कार जोड़कर द्वितीय भैरवी-वीज (**ह्स्क्ल्रीं**) बना ले। पुनः तृतीय **शक्ति-बीज** के आगे भैरवी-बीज जोड़े (**ह्स्त्रौः**)। इस प्रकार **'त्र्यक्षरी मन्त्र'** के तीनों बाला-वीजों के आगे भैरवी के वीज लगाकर मन्त्र बनाना चाहिए। इस मन्त्र का एक सौ बार जप करने से **'बाला त्र्यक्षरी विद्या'** शाप-हीना होकर फल-प्रदा होती है।

'शाप-मोचन' का द्वितीय प्रकार भी है। यथा-दो बार 'वाग्'-बीज, पुनः 'शक्ति'-बीज, पुनः 'काम'-बीज दो बार, फिर 'वाग्-वीज', फिर दो बार 'शक्ति'-बीज और अन्त में 'काम'-बीज लगाने से 'बाला विद्या'

का 'नवाक्षर मन्त्र' (ऐं ऐं सौः क्लीं क्लीं ऐं सौः सौः क्लीं) बन जाता है। इस **'नवाक्षर मन्त्र'** का **१०८ बार (अष्टोत्तर-शत)** जप करने से 'शाप' की निवृत्ति हो जाती है। यथा–

आद्यमाद्यञ्च तार्तीयं, कामः कामोऽथ वाग्भवम् ।
अन्त्यमन्त्यमनङ्गश्च, नवार्णः कीर्तितो मनुः ।।
जप्तोऽयं शतधा शापं, बालाया विनिवर्तते ।

'चेतनी' और **'आह्लादिनी'** मन्त्रों के जपने से बाला **'त्र्यक्षरी विद्या'** का निष्कीलन हो जाता है।

'चेतनी-मन्त्र' में तीन स्वर हैं अर्थात् अधरः=ऐं वाग् -वीज, शान्तिः='ई'-कार अनुस्वार के साथ, अनुग्रह=सानुस्वार 'औ'-कार। इस **'चेतनी-मन्त्र'** (ऐं ईं औं) के सौ बार जपने से **'निष्कीलन'** होता है।

'काम'-बीज के आदि में तार='ॐ'-कार और अन्त में हृदय='**नमः**' जोड़ने से **'आह्लादिनी-मन्त्र'** **(ॐ क्लीं नमः)** बन जाता है। इस मन्त्र का **शत-बार** जप करने से **निष्कीलन** हो जाता है। यथा–

चेतना ह्लादिनी मन्त्रौ, जप्तौ निष्कीलिता करौ ।
त्रि-स्वराश्चेतनी मन्त्रोऽधरः शान्तिरनुग्रहः ।।
तारादि-हृदयान्तः स्यात्, काम आह्लादिनी मनुः ।

'त्र्यक्षरी विद्या' के तीनों वीजों का **दीपन** तीन मन्त्रों से होता है। प्रथम **'वाग्'-वीज का 'दीपनी मन्त्र'–'ॐ वद वद वाग्वादिनि ऐं'** है। द्वितीय **'काम'-वीज** का–**'ॐ क्लिन्ने क्लेदिनि महा-क्षोभं कुरु क्लीं'** है तथा तृतीय **'शक्ति'-वीज** का 'दीपनी मन्त्र'–'**ॐ सौः मोक्षं कुरु**' है। इन **'दीपनी मन्त्रों'** का जप किए बिना **बाला 'त्र्यक्षरी विद्या'** का मन्त्र फल-प्रद नहीं होता। **'त्र्यक्षरी विद्या'** के इस रहस्य को कृतघ्न और शठ पुरुषों को कभी न बताना चाहिए। यथा–

तथा त्रयाणां वीजानां, दीपनैर्मनुभिस्त्रिभिः । सु-दीप्तानि विधायादौ, जपेत्तानीष्ट-सिद्धये ।।
वद युग्मं सदीर्घाम्बु, स्मृति बाला वनन्तगौ । सत्यः स-नेत्रो नस्तादृक्, वाङ् नवार्णाद्य-दीपिनी ।।
क्लिन्ने क्लेदिनि वैकुण्ठो, दीर्घ-खं सद्यगोऽन्तिमः । निद्रा स-चन्द्रा कुर्वन्ता, शिवार्णा मध्य-दीपिनी ।।
तारो मोक्षं च कुर्वन्ता, पञ्चार्णाऽन्त्यस्य दीपिनी । दीपिनीमन्तरा बालाऽऽराधिताऽपि न सिद्धिदा ।।
इदं रहस्यं नाख्येयं, कृतघ्न-कितवे शठे । परीक्षिताय दातव्यं, अन्यथा दातृ-दोषदम् ।।

बाला 'त्र्यक्षरी मन्त्र' की गुरु-परम्परा निम्न प्रकार है–

दिव्यौघ गुरु–**१. प्रकाशानन्द-नाथ, २. परमेशानन्द-नाथ, ३. पर-शिवानन्द-नाथ, ४. कामेश्वरानन्द-नाथ, ५. मोक्षानन्द-नाथ, ६. कामानन्द-नाथ** और **७. अमृतानन्द-नाथ** ।

सिद्धौघ गुरु–**१. ईशानानन्द-नाथ, २. तत्पुरुषानन्द-नाथ, ३. अघोरानन्द-नाथ, ४. वाम-देवानन्द-नाथ** और **५. सद्योजातानन्द-नाथ** ।

मानवौघ गुरु–**१. गगनानन्द-नाथ, २. विश्वानन्द-नाथ, ३. विमलानन्द-नाथ, ४. मदनानन्द-नाथ, ५. आत्मानन्द-नाथ, ६. प्रियानन्द-नाथ** ।

गुरु-चतुष्टय–**१. गुरु, २. परम गुरु, ३. परात्पर गुरु** और **४. परमेष्ठि-गुरु** (अपने गुरु-देव के सम्प्रदायानुसार) ।

✱✱

च-हवन

बाला 'त्र्यक्षरी मन्त्र' की साधना में प्रति-दिन त्रि-मधु-युक्त निर्दोष रक्त **'पद्म'** द्वारा होम कर ब्राह्मण साधकों को भोजन कराए। सु-वासिनी स्त्रियों को जगदम्बा-स्वरूप समझते हुए उनका पूजन कर उन्हें प्रसन्न करे। इस प्रकार होमादि के समाप्त होने पर अपने गुरु-देव को धन-धान्यादि द्वारा सन्तुष्ट करे।

उक्त विधि से अनुष्ठान करने पर जगत् वशीभूत होता है। साधक पर लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और वह सभी प्रकार के वैभव से युक्त होता है, इसमें संशय नहीं।

त्रि-मधु-समन्वित रक्त 'उत्पल', **रक्त-वर्ण 'करवीर'** पुष्प अथवा घृताक्त **'परमान्न'** द्वारा होम करके अखिल जगत् को वशीभूत किया जा सकता है। **'पलाश पुष्प'** द्वारा होम करने पर साधक 'वाक्'-सिद्धि को प्राप्त करता है। **'कर्पूर'** और **'अगरु'**-संयुक्त **'गुग्गुल'** द्वारा होम करने पर साधक 'दिव्य-ज्ञान' को प्राप्त करता है, कवित्व-शक्ति उसमें उत्पन्न हो जाती है। **'दुग्ध'** के साथ **'गुडूची-खण्ड'** द्वारा होम करने पर सकल प्रकार की अप-मृत्यु दूर होती है। **'दूर्वा'** द्वारा त्रि-दिन हवन करने पर दीर्घ जीवन का लाभ होता है। **'गिरिकर्णि पुष्प'** द्वारा 'ब्राह्मण' को, **'कल्लार पुष्प'** द्वारा 'राज-वृन्द' को, **'मालती कुसुम'** द्वारा 'राज-पुत्र-गण' को, **'पीतझिण्टी पुष्प'** द्वारा 'वैश्य-गण' को, **'पाटल पुष्प'** द्वारा हवन कर 'शूद्र' को वशीभूत किया जा सकता है।

मन्त्र के मध्य में अनुलोम-विलोम से साध्य का नाम युक्त कर मन्त्र का उच्चारण करते हुए **त्रि-मधु-समन्वित जाती पुष्प, विल्व पुष्प, जाती-फल, विल्व-फल** द्वारा हवन करने पर नर-नारी और नरपति सकल को वश में किया जा सकता है, इसमें सन्देह नहीं।

चन्दनाक्त 'मालती' और **'वकुल' पुष्प** द्वारा हवन करने पर साधक एक वर्ष में 'कवित्व-शक्ति' को प्राप्त करता है। **त्रि-मधु-युक्त 'विल्व-फल'** द्वारा हवन करने पर समस्त लोक का वशीकरण एवं वाञ्छित सम्पदा का लाभ होता है। जो व्यक्ति **'पाटल'** पुष्प, **'कुन्द'** पुष्प, **'उत्पल'**, **'नागकेशर'**, **'चम्पक'** द्वारा हवन करता है, वह एक वर्ष में ऐश्वर्य-बल से परिपूर्ण होता है। **'घृताक्त अन्न'** द्वारा हवन करने पर अन्न-समृद्धि का लाभ किया जा सकता है। जो व्यक्ति इन्द्रिय-संयम करके **'कस्तूरी'** और **'कुंकुम'** एकत्र करके **कर्पूर** द्वारा हवन करता है, वह कन्दर्प की भी अपेक्षा अधिक सौन्दर्य-सम्पन्न होता है। जो साधक **घृत, दग्धि, दुग्ध-मिश्रित 'लाजा'** द्वारा हवन करता है, वह निखिल रोग से मुक्त होकर शत वर्ष जीवित रहता है।

हवन के पश्चात् अर्द्ध-भाग **चन्दन**, चतुर्थांश **कुंकुम** एवं **गोरोचन**-इन तीन वस्तुओं को शीतल जल से मिलाकर उससे ललाट में **'तिलक'** धारण करने से सारा विश्व वशीभूत होता है। इसी प्रकार **कर्पूर, गाँठियाला** और **कृष्ण-शटी** सम परिमाण में लेकर, उसके चार भाग **जटामांसी**, चार भाग **गोरोचन**, सात भाग **कुंकुम**, दो भाग **चन्दन**-ये सब वस्तुएँ मिश्रित करके शीतल जल में किसी कन्या से पिसवा ले। इस द्रव्य को मन्त्र-पूत कर उससे **'तिलक'** करे, तो सभी प्राणी वशीभूत होते हैं।

❑❑❑